मालवीय प्रकाश

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान की हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष -1 | अंक - 1 | जयपुर | जनवरी - मार्च 2012 | पृष्ठ संख्या - 4

सन्देश

आचार्य (डॉ.) इन्द्र कृष्ण भट्ट

निदेशक- मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जयपुर (राजस्थान)

यह संस्थान के लिए अत्यन्त गौरव का विषयहै किप हलीब रह मारीर राजभाषा हिन्दी में एक त्रैमासिक पत्रिका ''मालवीय प्रकाश'' का प्रकाशन प्रारम्भ हाने जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी भाषा में रुचि रखने वाले सभी संस्थान सदस्य व विद्यार्थी इसके माध्यम से अपनी रचनात्मक अभिरुचि को अभिव्यक्त कर सकेंगे। व्यक्ति किसी भी जाति, देश या काल से हो अपने भावों व विचारों के उद्‌गार को अपनी मातृभाषा में प्रकट करने पर ही सहज व संतुष्ट महसूस करता है एवं भावों एवं विचारों का सही आदान-प्रदान होता है तभी उनका गतिमान होना सार्थक प्रतीत होता है।

किसी भी देश व समाज की समृद्धी एवं खुशहाली के लिये विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में हो रहे अनुसंधानों और उनके परिणामों की जितनी आवश्यकता है उससे कहीं ज्यादा समाज के सोच को सही दिशा में ले जाने की आवश्यकता होती है या यूं कहें कि समाज के विचार ही वह कर्मभूमि है जिसमें सबकी समृद्धी एवं शांति की फसल

लहलहाती है गलत नहीं होगा और इसके लिये मातृभाषा के माध्यम का होना श्रेयस्कर होगा।

संस्थान के सभी सदस्यों को एक-दूसरे से विचारों की डोर से जोड़कर रखेन की दिशा में उठाया गया यद्यपि एक छोटा सा प्रयास है पर मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि समयावर में यह एक सार्थक एवं महत्त्वपूर्ण विचारमंच साबित होगा।

''मालवीय प्रकाश'' के निरबंध सम्पादन एवं भविष्य में इसके अन्य संस्करणों के प्रकाशन की सफलता के लिये मैं अपनी व संस्थान की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

- डॉ. इन्द्र कृष्ण भट्ट

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी

एक अनमोल शख्सियत

भारत को अभिमान तुम्हारा, तुम भारत के अभिमानी,
पूज्य पुरोहित थे हम सबके रहे सदैव समाधानी,
तुम्हें कुशल याचक कहते हैं, किन्तु कौन तुमसा दानी।
स्वयं मदनमोहन की तुम में तन्मयता है समा गई,
कल्याणी वाणी जन-जन के हित में धूनी रमा गई।

- साहित्यकार मैथिलीशरण गुप्त

''मैं तो मालवीय जी महाराज का पुजारी हूँ, पुजारी कैसे स्तुति के वचन लिख सकता है? वह जो कुछ लिखेगा अपूर्ण सा प्रतीत होगा।''

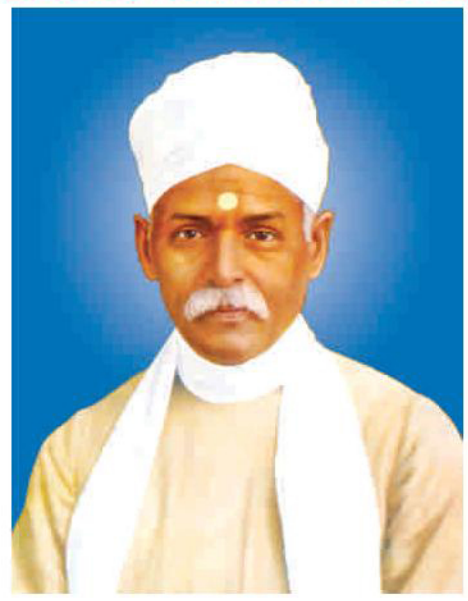

- महात्मा गाँधी

बीसवीं शताब्दी की इस देश की महानत्तम उपलब्धि, कभी ना खत्म होने वाली ऊर्जा और मेहनत के धनी, महामना मालवीय जी आधुनिक भारत के सबसे अग्रणी जनक थे। १९वीं शताब्दी के अंत में और बीसवीं शताब्दी के शुरु में उन दिनों यह असंभव था कि कोई पंडित जी के नाम से अनभिज्ञ हो क्योंकि करीब-करीब ६० वर्षों तकभ ारतके ज नजीवनप रव हछ ाये रहे और किसी न किसी सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक और शैक्षणिक गतिविधियों में अपने चमत्कारी व्यक्तित्व की वजह से वह इन सभी क्षेत्रों को बराबर प्रभावित कर पाये।

वह दूसरों के विचारों को बराबर की अहमियत देते थे, यही वजह थी कि विरोधी विचारधारा के व्यक्ति व दल उन्हें अपना मित्र व रहबर मानते थे। वह मानवीय संवेदनाओं व असाधारण सोच के धनी थे जिसकी वजह से हर धर्म और राजनैतिक-विचारों वाले लोग उनके कायल थे। इसलिये कोई आश्चर्य नहीं कि वह उस समय के बहुत चर्चित व चहेते नेता व शख्सियत बन सके। उस जमाने के बहुत से युवा लोग उनके निस्वार्थ काम करने के तरीके, उनकी सादगी और शिक्षा के प्रति उनके उत्साह व उससे भी अधिक उनके देशप्रेम से प्रभावित थे।

शेष पृष्ठ 3 पर...

एक सच्चे लोकतंत्र में जनता ही सर्वोच्च है न कि संसद

पिछले कुछ समय में देश में जो उतार-चढ़ाव आए उस वजह से एक बात ने कई लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया और वह थी राजनीतिज्ञों के प्रति घृणा की भावना। लोकमंचों से उपजे वक्तव्यों और आंदोलन के प्रवाह में आम आदमी के गुस्से की इस अभिव्यक्ति ने सत्ता के गलियारे को हिलाकर रख दिया। टीवी चैनलों पर एक दूसरे पर कटाक्ष करते ये राजनेता एक हो गये और अपने विरुद्ध की गयी टिप्पणियों के लिए माफीनामें की मांग करने लगे। इस पूरे घटनाक्रम ने भी राजनेताओं को जनता की कसौटी पर खरा उतरने के लिए मजबूर किया।

हम दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र हैं। स्वतंत्रता के समय अपनायी गई इस शासन व्यवस्था पर समय-समयप रअ 'गुलियांउ ठतीर हीहै'।अ रेइ नस भी खामियों के बावजूद हम दुनिया के सफलतम लोकतंत्र की छवि बनाने में सफल रहे हैं। ऐसे में नेताओं से ये नफरत कहां तक उचित है। हम अगर चाहें तो अगली बार चुनाव आने पर उन जन प्रतिनिधियों को बदल दें परन्तु जब तक वे सत्ता में हैं हमें उन्हें स्वीकार करना ही होगा। आखिर उनके चुनाव में कहीं ना कहीं हमारा हाथ जरूर रहा है।

राजनीतिज्ञों के प्रति इस घृणा के कई कारण समझे जा सकते हैं-

1. एक के बाद एक होते घोटाले और उनके बढ़ते हुए आकार ने लोगों में एक हलचल पैदा कर दी है। साथ ही समुचित कार्यवाही का अभाव और जवाबदेही की कमी ने इस आग में घी का काम किया है।

2. सत्ताधारी लोगों का मीडिया में लापरवाह तरीके से वक्तव्य देना लोगों के लिए अब असहनीय हो चला है।

3. कुछ गिनती के परिवारों के ही राजनीति में शामिल होने से आम आदमी की भागीदारी कम हुई।

4. टीवी चैनलों पर एक दूसरे पर दोषारोपण करते विभिन्न राजनीतिक दलों ने अपने प्रति आम जनता की इस घृणा को तीव्र किया है।

5. सत्तालोलुप और आत्मसंतृप्त राजनीतिज्ञों की बहुतायत ने भी लोगों की इस भावना को तीव्र किया है।

6. मंत्रियों का अपना मनपसंद विभाग नहीं मिलने पर इस्तीफा दे देना, मीडिया में विपक्ष पर अनावश्यक दोषारोपण, संसद में हाथपाई की घटनाएं जैसे मूर्खतापूर्ण प्रसंगों के बारंबार दोहराये जाने से जनता का लोकतंत्र में विश्वास कम हुआ है।

7. और सबसे महत्त्वपूर्ण बात ये है कि इस गौरवशाली भारत का युवा एक अभिनव भारत की कल्पना करता है और इस देश को उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर देखना चाहता है, परन्तु जब सत्ता के गलियारे में घटित इन आडबंरों को जब वह देखता है तो उसके मन में देश के प्रति गर्व की भावना धूमिल हो जाती है। इसलिए आज का युवा चाहता है कि राजनीतिज्ञ अपने

शेष पृष्ठ 3 पर...

सम्पादकीय टिप्पणी...

इस संस्थान के प्रबुद्ध पाठाकों से **'मालवीय प्रकाश'** के जरिये जुड़ने का जो सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ है उसे मैं ईश्वर की कृपा मानती हूँ। आपके और अपने विचारों के धरातल पर स्नेह की छाँव तले जो सहयात्रा है उसमें हिन्दी में प्रकाशित होने वाले इस नये नवेले प्रयास में, मैं आपसे चहुँ मुखी सहयोग एवं रचनात्मक आलोचना की आकांक्षा रखती हूँ ताकि संस्थान की यह हिन्दी भाषी पत्रिका हमारे जुड़ाव को एक नया आयाम दे सके।

इस पत्रिका के सम्पादन की अनुमति प्रदान करने एवं इसके लिये आर्थिक सहायता प्रदान करने हेतु सम्पादक मंडल संस्थान के माननीय निदेशक महोदय आचार्य इन्द्र भट्ट का आभार प्रकट करता है।

पाठकगण से यह आशा करती हूँ कि इस त्रैमासिक पत्रिका के सम्पादन हेतु अपनी रचानाओं को हम तक पहुंचाते रहें जिसके लिय व्यक्तिगत रूप से सम्पादक को अथवा पत्रिका की ई-मेल : *malaviyaprakash.lokmat@gmail.com* के जरिये हम तक पहुँचा सकते हैं। अपने प्रबुद्ध पाठकों से यह भी उम्मीद करती हूँ कि पत्रिका में प्रस्तुत विचार सामग्रीप रअ पनेस ुझावोंक ेह मत कप ेषितअ वश्यक रेंगे।अ ापकीभ ावनाओंए वं मूल्यवान विचारों को शिरोधार्य करते हुये इस पत्रिका का संपादन आरंभ करना चाहती हूँ।

सबके स्वर्णिम एवं सुखद भविष्य की कामना करते हुये,

सस्नेह,

भवदीय,

डॉ. ज्योति जोशी, सम्पादक एवं सहायक आचार्य, रसायन शास्त्र विभाग मा. रा. अभि. संस्थान, जयपुर (राज.)

9413971604, 0141-2713350, jojo_jaipur@yahoo.com

इस अंक में ...

विवरण	पृष्ठ संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
सन्देश	1	कविता : क्या मैने चलना सीख लिया	2
महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी	1	कविता : पिता	2
सम्पादकीय टिप्पणी	1	21वीं सदी में हिन्दी की हकीकत और...	3
एक सच्चे लोकतंत्र में जनता ही सर्वोच्च...	1	कविता : फेसबुक / हालात / आत्म मन्थन	3
संस्थान में हिन्दी सप्ताह का आयोजन	2	श्रीमद्‌भगवद्‌गीता	4
भारत के प्रेक्षपास्त्र पुरोधा डॉ. कलाम...	2	कविता : नमन / जी चाहता है	4

संस्थान में हिंदी सप्ताह का आयोजन

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर में दिनांक 13 से 19 सितम्बर, 2011 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन संस्थान की राजभाषा समन्वय समिति द्वारा किया गया।

सप्ताह का शुभारंभ 13 सितम्बर को सायं 5.00 बजे किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. मनोहर प्रभाकर थे। समारोह की अध्यक्षता मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जयपुर के निदेशक प्रो. इन्द्र कृष्ण भट्ट ने की। उद्घाटन समारोह में डॉ. प्रभाकर ने कहा कि इंजीनियरों को हिंदी भाषा का साहित्य जरूर पढ़ना चाहिए। साहित्य भाषा को गहराई देता है। हिंदी में सूचना प्रौद्योगिकी को वहन करने की गहरी क्षमता है। उद्घाटन कार्यक्रम के अध्यक्ष संस्थान के निदेशक प्रो. इन्द्र कृष्ण भट्ट ने हिंदी के दैनिक कार्यों में उपयोग पर बल दिया। कार्यक्रम के दौरान स्वागत अभिभाषण हिंदी सप्ताह कार्यक्रम के संयोजक डॉ. राज कुमार व्यास, सह आचार्य, रासायनिक इंजीनियरी ने और सप्ताह भर चलने वाली गतिविधियों की जानकारी डॉ. कैलाश सिंह, उपाचार्य, रासायनिक इंजीनियरी ने दी। कार्यक्रम का संचालन रसायन शास्त्र की सह आचार्य डॉ. ज्य ोति जोशी ने और धन्यवाद ज्ञापन श्री सुशांत उपाध्याय सहायक आचार्य ने किया।

इस कार्यक्रम के उपरान्त हिन्दी में लिखित एवं मौखिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के छात्र-छात्राओं और स्टाफ के सदस्यों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित अन्य कार्यक्रमों एवं गतिविधियों में हिन्दी निबंध लेखन, आशुभाषण एवं काव्यपाठ के अतिरिक्त अभियंता दिवस पर तकनीकी विषयों पर भाषण एवं ओजोन दिवस पर वाद-विवाद प्रतियोगिता रहीं। दिनांक 19 सितम्बर, 2011 को हिन्दी सप्ताह का समापन समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं दूरदर्शन केंद्र, जयपुर के पूर्व निदेशक श्री नन्द भारद्वाज थे एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के अधिष्ठाता प्रशासन प्रो. आलोक रंजन ने की। इस अवसर पर उपस्थित छात्रों एव स्टाफ के सदस्यों को श्री नन्द भारद्वाज ने संबोधित कर हिंदी भाषा को लोकप्रिय का अनुरोध किया। समापन समारोह के दौरान सप्ताह भर चली हिन्दी कि प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार एवं राजभाषा समिति के सदस्यों व कार्यक्रम को सम्मानित किया गया।

डॉ. राजकुमार व्यास, समन्वयक, राजभाषा

भारत के प्रक्षेपास्त्र पुरोधा

डॉ. अब्दुल कलाम : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान प्रांगण में विद्यार्थियों को संदेश

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जयपुर के लिये 31 दिसम्बर, 2011 का दिन एक स्वर्णिम अध्याय की शुरूआत कर गया। संस्थान के लिए वह गौरवशाली दिवस रहा जब एक प्रखर राष्ट्रवादी, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक एवं ''मिसाइल मैन'' के नाम से मशहूर डॉ. ए.पी.जे.अ ब्दुलक लामज ो कि विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र ''भारत'' के राष्ट्रपति पद पर आसीन रहे, मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान परिसर में विद्यार्थियों से रूबरू होने का चर्चा करने पधारे और युवा अभियन्ताओं व वैज्ञानिकों को वह सीख व संदेश दे गये जिसकी गूंज आज भी हम सभी को सुनाई देती है।

डॉ. कलाम का जन्म 15 अक्टूबर, 1931 को एक अति साधारण परिवार में रामेश्वरम् में हुआ। इनके पिता जैनुलाबिद्दीन मरकयार एक गरीब नाविक थे जिनका कार्य तीर्थ यात्रियों को रामेश्वरम् से धनुषकोडी ले जाना था। इन सबके बावजूद डॉ. कलाम की पढ़ने-लिखने में गहरी रूचि थी। पढ़ाई के साथ-साथ वह अपने भाई के अखबार बांटने के कार्य में भी हाथ बंटाते थे।

डॉ. कलाम ने विज्ञान की पढ़ाई सेंट जोसफ कॉलेज से की व उसके पश्चात् मद्रास इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से वायुपत्तन अभियांत्रिकी की उपाधि अर्जित की। वर्ष 1958 में उन्होंने अपना पेशेवर जीवन रक्षा अनुसंधान एवम् विकास संगठन से प्रारम्भ किया व 1963 से 1983 तक डॉ. कलाम भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुये अपने लक्ष्य की ओर तेजी से अग्रसर हुए। आप एकीकृत निर्देशित प्रक्षेपास्त्र विकास कार्यक्रम के एक प्रमुख प्रणेता रहे हैं। आपके निर्देशन में ही पृथ्वी, त्रिशूल, आकाश, नाग और अग्नि प्रक्षेपास्त्रों का सफल परीक्षण किया गया। डॉ. कलाम को भारतीय प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम का भीष्म पितामह कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

आपने रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में अपने दायित्वों व देश के प्रति कर्त्तव्यों का बखूबी के साथ निर्वहन किया। वर्ष 1990 में डॉ. कलाम को ''पदम् विभूषण'' से सम्मानित किया गया।1 998म ें उ न्हेंभ ारतके स र्वोच्चन ागरिक सम्मान ''भारत-रत्न'' से विभूषित किया गया। इतने बड़े मुकाम पर पहुंचने के बाद भी डॉ. कलाम एक छोटे से कमरे में रहते रहें है जहाँ सिर्फ पुस्तकें उनकी जीवन संगनी रही हैं। शाकाहारी डॉ. कलाम ने कुरान व भगवत्‌गीता दोनों का गहराई से अध्ययन किया है। सरस्वती वीण ा बजाना इनका शौक है। डॉ. कलाम की दृष्टि में सम्मान, प्यार व देश सेवा की तुलना में पैसा कुछ भी नहीं है।

डॉ. कलाम को देश के राष्ट्रपति के रूप में पाकर, राष्ट्र के संपूर्ण वैज्ञानिक समुदाय ने अपने को गौरवान्वित महसूस किया था। यह पहला अवसर था जबर ाजनीतिज्ञों,स माजस ेवकोंव न ौकरशाहोंक ी भीड़ से अलग हटकर एक ख्यातनाम वैज्ञानिक को देश के सर्वोच्च पद पर आसीन किया गया था।

ऐसे महान वैज्ञानिक, चिन्तक, प्रेरक, राष्ट्रप्रेमी, संगीतज्ञ, और समाज सेवी, आम व्यक्ति की तरह रहने व०ा यवहारक रनेव ालेड ॉमानदारव च रित्रवानड ॉ. अब्दुल कलाम का मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान में आगमन ही किसी उत्सव से कम नहीं था। संस्थान जब अपना स्वर्ण जयन्ती समारोह आयोजित करने की दहलीज पर खड़ा है, उस समय डॉ. कलाम का उद्‌बोधन विद्यार्थियों के मन मस्तिष्क को आंदोलित कर एक स्वर्णिम इतिहास रच गया।

छात्र-छात्राओं से हुये सवाल-जवाब सत्र से पूर्व डॉ. कलाम ने विद्यार्थियों का आव्हान किया कि ''आप यूनिक हो तो सब कुछ कर सकते हो, आवश्यकता है स्वयं को पहचानने की, नये साल की पूर्व संध्या पर आपको यह तय करना है कि आप यूनिक किस तरह बन सकते हैं।'' उन्होंने कहा कि नए साल के प्रति आपकी सोच क्या है? इसके पश्चात आपको यह तय करना होगा कि नव-नर्ष में हमें क्या करना है। कलाम ने कहा कि एक यूनीक इन्सान (विलक्षण व्यक्ति) के लिये कुछ भी असंभव नहीं है। उन्होंने कहा कि कठिन परिश्रम करो व ज्ञान को संवर्धित करते जाओ। हमें इस बात में अंतर करना होगा कि कल हमने क्या काम किया था और आज हम क्या कर रहें हैं।

सवाल-जवाब सत्र में जब उनसे पूछा गया कि वहय ुवाओंस े क याउ म्मीदक रतेह ैं त ोज वाबम ें उन्होंने कहा कि देश के युवाओं में आत्म विश्वास भरने की जरूरत है। आत्मविश्वास के बल पर युवा कुछ भी कर सकते हैं। इससे देश भी तरक्की करेगा और स्वयंय ुवाओंक ाभ ीभ लाह ोगा।उ न्होंनेक हाकि एम.एन.आई.टी. के विद्यार्थी आत्मविश्वास से लबरेज हैं और आज यहाँ टीम इंडिया मौजूद है। पहला उपग्रह प्रक्षेपण, इसके बाद अग्नि मिसाइल का सफल परीक्षण,फि रपो करणप रमाणुवि स्फोटअ ौरइ ंडियाम शिन 2020 को संसद से मंजूरी मिलने को डॉ. कलाम अपने लिये गर्व की बात मानते है।

डॉ. कलाम के अनुसार कुछ भी असंभव नहीं है। आपका कहना कि हममें इतना साहस हो कि हम खुद सफलता हासिल करें और दूसरे की कामयाबी पर खुश हों। हमेशा सोचें कि देश के लिये क्या कर सकते हैं राष्ट्र को क्या दे सकते है हैं। देश को देना सीखें। जिस प्रकार डॉ. कलाम राष्ट्र के गौरवशाली इतिहास व गौरवमयी संस्कृति महिमा को अपने कार्यों द्वारा सुरक्षित व संरक्षित बनाये रखने में कामयाब रहे हैं, उसी प्रकार हम आशा करते हैं कि मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान परिवार के सभी सदस्य इस गौरवशाली संस्थान के इतिहास को न केवल सुरक्षित बनाये रखने में सफल होगें वरन् संस्थान के तेजी से अनवरत व सतत विकास में योगदान दे नये आयामों व नव-प्रतिमानों की प्रतिष्ठा में विशिष्ट भूमिका का निर्वहन कर सकेंगे।

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान के विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों, अधिकारियों व कर्मचारियों तथा समस्त अभियांत्रिकी व वैज्ञानिक समुदाय की ओर से डॉ. अब्दुल कलाम को राष्ट्र सेवा के लिये कोटि-कोटि बधाई व शत्-शत् नमन्।

अशोक कुमार अग्रवाल
पूर्व विभागाध्यक्ष, वैद्युत अभियांत्रिकी

क्य ा मैने चलना सीख लिया??

डग-डग पग भर के पकड़ के माँ बाप की ऊंगली
मैं चलता था लड़खड़ा के, कभी सहारे पर।
फिर, खुद सम्भलता, लुड़कता, संतुलन बनाता,
पहुँच जाता था दीवार के किनारे पर।

इसे देखकर होते थे उल्लासित मेरे घर वाले,
कि मैंने चलना सीख लिया।

देखा दुनिया बहुत अच्छ ी है,
मन की बहुत सच्ची है,
हर कोई देता सहारा है,
उनका लाल समझदार जो होता जा रहा है
सभी का प्रोत्साहन था, सराहना थी,
उमंग की भावना थी,
कि मैने चलना सीख लिया।

समय बदला, मैं घर से निकला-
देखा हर कोई एक दूसरे से आगे भाग रहा है,
औरों को छोड़ो, खुद को ही पछाड़ रहा है,
कई टकराते हैं गिरते हैं,
सम्भल कर उठते है, फिर आगे बढ़ जाते हैं,
देख उस नई दुनिया को मुझे झटका सा लगा,
रूका! सोचने लगा-
क्या मैंने चलना सीख लिया??

पर वो शुरआत थी,
आगे कुछ अलग ही बात थी।
जिन्दगी की रेस थी,
और मुझे बनानी अपनी पहचान थी,
हर तरफ सोच से कुछ अलग ही हो रहा था,
और उस दौड़ की रफ्तार में शामिल
मैं एक नया मोहरा था।
उस गणित को सुलझाता,
मैं उलझा हुआ खुद में,
सोचता था-
क्या मैने चलना सीख लिया??

फिर हुआ रूबरू समाज के नकाबी चेहरे से,
की गुफ्तगू खुद के थकेले ऊसलों से,
और समझा–
यहाँ धक्के भी हैं, मुक्का लात भी है,
झूठ है, फरेब है, धोखा है, ठोकरे हैं।

मैं फिर गिरा, और उठा पहन कर
दिखावे की खोखली मूरत,
तब लगा–
मैने चलना सीख लिया है...

लव पोरवाल
पंचम वर्ष, वास्तु कला विभाग

पिता

तुमने मुझे सजा दी,
डाँटा मुझे टोका और सुधारा मुझे,
फिर भी मुश्किल और जरूरत के क्षणों में,
तुम हमेशा मेरे साथ खड़े थे।

जैसे ज़िंदगी की उबड़-खाबड़ यात्रा के बाद,
किसी थके हारे को मिले घने वृक्ष की शीतल छाया,
वैसे ही तुम रहे खड़े एक मजबूत चट्टान की तरह,
सहारा बन के हमेशा मेरे साथ।

तुम ने मुझे प्यार दिया, सुरक्षा और सहारा भी,
पर यह भी सिखाया कैसे खुद अपना सहारा बनूँ,
सिखाया ज़िंदगी की जटिल राहों के बीच,
अपना रास्ता बनाना।

पापा तुम्हीं ने सिखाया
कैसे मुस्कराते है दुःख के लम्हों में
निराशा के क्षणों में कैसे जिया जाता है
मुसीबत के पलों में साये की जगह तुम्हीं तो खड़े थे,

जब मैं हार से भयभीत थी, तुमने मुझे ढाँढस बंधाया।
प्रोत्साहन किया, जब मुझे बहुत जरूरत थी इसकी,
गलतियों पर मेरी, डाँटा और समझाया भी बहुत
पर मेरी छोटी-सी उपलब्धि पर, खुश हुये,
मुझसे कहीं ज्यादा भी।

मैं जैसी भी हूं आज, हूँ पापा आपकी वजह से,
जुड़ी हूँ आपसे एक खास रिश्ते से,
क्योंकि आप मेरे दोस्त, दार्शनिक और
पथ प्रदर्शक हो, पिता हो!

- डॉ. ज्योति जोशी
(सहायक आचार्य, रसायन शास्त्र विभाग)

प्रखर विचार, भाव, सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, संयम, साहस, धैर्य आदि गुण मनुष्य के व्यक्तित्व को निखारते हैं। यदि ऐसा संवेदनशील व्यक्ति अपने धधकते हुए विचारों से लेखनी उठा ले तो वह समाज की नींव को हिलाकर रख सकता है। लेखनी की इस अग्नि में सामाजिक कुरीतियाँ, अंधविश्वास, कुप्रथाएं आदि भस्मीभूत हो जाती हैं और समाज को विवेकपूर्ण दिशा में चलने के लिए बाध्य कर देती हैं।

समय और शक्तियों के सदुपयोग से खुशी का खजाना प्राप्त होता है।

पृष्ठ 1 का शेष...

महामना पंडित मदन मोहन ...

उन्होंने ही हिंदी को आगे बढ़ाने में अग्रणी योगदान दिया। महात्मा गांधी से कई विषयों पर वैचारिक-स्तर पर मतभेद होने के बावजूद, उन्होंने गांधी व कांग्रेस के देश को आज़ाद करानेक ेहि रम ुहिमम ें ह रस ंभवस हयोग दिया।

अपनी वृद्धा अवस्था में जब वह बहुत बीमार व वृद्ध हो गये थे तब भी देश के प्रति उनका प्रेम क्षीण नहीं हुआ और उन दिनों भी वह यात्रायें किया करते और राष्ट्रीय स्तर पर हो रही बहसों में हिस्सा लिये करते थे। देश के लिये किये गये उनके त्याग व सेवाओं से वह हमें प्रेरणा दे गये हैं। उन्होंने न केवल शिक्षा के महत्व को समझाया बल्कि उसको प्रदान करने के जरूरी तरीकों को भी जुटाया। जिसका जीता-जागता उदाहरण हमारे समक्ष बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के तौर पर मौजूद है, जिसे उन्होंने अथक प्रयासों एवं शिक्षा के प्रति अपने प्रेम की वजह से ही स्थापित किया।

आज के युवा को, उनके शिक्षा व देश के प्रति प्रेम को अपनी यादों में भी रखना चाहिये एवं उसे अपने कर्म क्षेत्र में भी उतारना चाहिये।

पं. मालवीय जी बहुत उत्साही व जीवंत व्यक्तित्व के धनी एवं महान शिक्षाविद् थे। 19वीं सदी में जब अदालतों में फारसी व अरबी-फारसी शिक्षित उर्दू या फिर अंग्रेजी में काम होता था ऐसे समय में पंडित मालवीय जी ने हिंदी को अदालतों में प्रवेश कराने की पहल की, इस मुहिम में वही नेता एवं मुख्य संचालक थे पर सरकार से बातचीत करने के लिये उन्होंने अगुवा किसी और को बना रखा था। हमेशा ही वह स्वयं पीछे रहकर काम करते थे। सार्वजनिक सेवा का तो जैसे उन्होंने व्रत ही ले रखा था, सार्वजनिक सेवा के सामने उनके निजी कार्य भी गौण थे। जब वह वकालत से जीविका उपार्जन कर रहे थे, तब सार्वजनिक कार्य सामने आने पर, अपनी जीविका का कार्य लौटा देते या किसी ओर को दे देते थे। उनके मुख से दूसरों के लिये सदा मिठास टपकती थी, उनके बोलने और लिखने में नपे-तुले शब्द निकलते थे। सेवा करने के लिये उनकी कल्पनाशीलता अनोखी व असीम थी। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की कल्पना का उस वक्त के कुछ तथा उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों ने विरोध किया व उसे असंभव करार दिया पर उनके पुरुषार्थ और असाधारण व्यक्तित्व से ही उनका सपना साकार हो सका।

राजनीति व शिक्षा दोनों क्षेत्र में उन्होंने युग परिवर्तन व प्रवर्तक का काम किया। वह आदर्श मनुष्य थे, विद्यार्थियों तथा युवकों को आदर्शय ुवकब नानाच ाहतेथ ेजिनमेंइ ाान, बल, वीरता, नैतिकता त्याग एवं आत्म नियंत्रण और कर्त्तव्य की भावना हो। उनके गुणों और आदर्शों को यदि हम अपने जीवन में उतार सकें तो यही उनके लिये हमारी सच्ची श्रृंद्धाजलि होगी।

महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी ने कुछ धर्म के उपदेश भी समय-समय पर दिये, यथा -

1. सभी धर्मों के पर्वों को मिलजुल कर मनाना चाहिये।
2. इस बात को कभी भूलना नहीं चाहिये कि भले कर्मों का फल भला एवं बुरे कर्मों का बुरा होता है तथा कर्मों के अनुसार ही हमें जन्म लेना पड़ता है या मोक्ष मिलता है।
3. समानधर्मी, कार्य समाजी, ब्रह्मसमाजी, सिख, जैन और बौद्ध आदि सब हिन्दुओं को चाहिये कि अपने-अपने विशेष धर्मों का पालन करते हुये एक-दूसरे के साथ धैर्य, प्रेम व आदर बरतें।
4. अपने विश्वास में दृढ़ता, दूसरे की निंदा का त्याग, मतभेद में सहनशीलता (चाहे धर्म संबंधी हो था लोक संबंधी) रखना चाहिये। प्राणीमात्र से मित्रता रखनी चाहिये।
5. जो काम अपने को बुरा या दुखदायी जान पड़े, उसे दूसरों के साथ नहीं करना चाहिये।
6. मनुष्य को चाहिये न वह किसी से डरे, ना ही किसी को डर पहुंचाये।
7. हर एक के लिये यही उचित है कि वह चाहे कि सब सुखी रहें, सबका भला हो, कोई दुःख न पाये और वह सदैव दूसरों के दुःख दूर करने के लिये तत्पर रहे।
8. श्रीमद्भगवत गीता के अनुसार जीवन जीना चाहिये, जिसे सज्जन के समान जीना बताया गया है।

प्रातः स्मरणीय पूज्य पं. मदन मोहन मालवीय की पुण्य स्मृति को प्रणाम करते हुए शेष आगामी अंक में ...

- डॉ. ज्योति जोशी

(सहायक आचार्य, रसायन शास्त्र विभाग)

21वीं सदी में हिन्दी की हक़ीकत और संभावनाऐं

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपनी भावनाओं एवं अपने विचारों को किसी दूसरे के सामने व्यक्त करते हैं। दूसरों की भावनाओं और विचारों को समझते हैं। शायद इससे अलग भाषा की कोई परिभाषा है भी नहीं।

भाषा का सम्बन्ध मनुष्य और समाज से है। भाषा कोई समूह विशेष की संपत्ति नहीं है। भाषा एक सामाजिक निधि है इसलिए सामाजिक सरोकारों से परे कोई भाषा नहीं हो सकती।

किसी भी देश में राष्ट्रभाषा का दर्जा उसी भाषा को प्राप्त होता है। जो देश विशेष में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाती है। निश्चित तौर पर भारतीय जनमानस का बड़ा हिस्सा हिन्दी से परिचित है। इसलिए यह प्रस्तावित किया गया कि भारत में राष्ट्रभाषा का अधिकारी हाने का सम्मान हिन्दी को प्रदान किया जाए। इस बारे में तथ्यात्मक जानकारी इस प्रकार है- आजादी के बाद भारतीय संविधान का निर्माण प्रारम्भ हुआ। इस दौरान भाषा सम्बन्धी संविधान पर भी बहस हुई। यह बहस 12 सितम्बर को शुरू हुई और 14 सितम्बर 1949 को पूर्ण हुई। इस बहस के बाद इस बात पर सहमति बनी कि भारत संघ की राजभाषा हिन्दी एवं लिपि देवनागरी होगी एवं अंग्रेजी को आने वाले 15 वर्षों तक सह राजभाषा के रूप में उपयोग लिया जाएगा। यह 15 वर्ष 1965 में ही समाप्त हो गए लेकिन आज जो हालात है वो आपके सामने है। भाषा की राजनीति और राजनीति की भाषा ने हिन्दी का अपहरण कर लिया है। भारतीय मानसिकता पर अंग्रेजी इस तरह हावी हो चुकी है कि उच्चतम न्यायालय में दायर होने वाली अपील भी अंग्रेजी में दायर करनी पड़ती है और ऐसे हालातों में 14 सितम्बर को जब हिन्दी दिवस मनाया जाता है तो ऐसा महसूस होता है कि हम हिन्दी दिवस नहीं अपितु श्राद्ध पक्ष में हिन्दी का श्राद्ध मनाने के लिऐ एकत्रित होते हैं। इस तरह हर साल हिन्दी दिवस मनाये जाते हैं। हिन्दी की दशा पर घड़ियाली आँसू बहाऐ जाते हैं। लम्बे-लम्बे वादें और घोषणाऐं की जाती हैं और दूसरे दिन सब अपने-अपने काम में व्यस्त हो जाते हैं। बेचारी हिन्दी वही सिसकती हुई खड़ी रह जाती है। कोई उसे अपने साथ नहीं ले जाना चाहता है। हिन्दी की इस बरबादी के लिए हम सब जिम्मेदार हैं। सदियों तक चलने वाला उपनिवेशवाद जिस भाषायी सम्यता की जड़ों को नही हिला पाया उन जड़ों को हम खुद काटने पर लगे हैं।

कुछ एक सरकारी काम को छोड़ दें तो बाकि सारे सरकारी और गैर-सरकारी काम अंग्रेजी में होते हैं। कुछ भी नया सीखने से पहले अंग्रेजी सीखना जरूरी हो गया है। हमारे देश के कुछ बुद्धिजीवी यह तर्क देते हैं कि हिन्दी भाषा विचारों को अभिव्यक्त करने में सक्षम नहीं है इसलिये इसका व्यापक उपयोग नहीं हो सकता है। इस वाक्यान से उनकी हीनभावना और अशिक्षा झलकती है। किसी भाषा का कितना अच्छ ा और व्यापक उपयोग हो सकता है, यह उस भाषा पर नहीं बल्कि उस भाषा को जानने वाले पर निर्भर करता है। अगर हम अपनी मातृभाषा को पढ़, लिख, और समझ नहीं सकते और उसका व्यापक उपयोग नहीं कर सकते तो यह भाषा का नहीं, हमारा दोष है।

हिन्दी की बिगड़ती हालत को देखकर मुझे ऑरकुट की याद आती है कि कहीं भारत में अंग्रेजी के जमाने में हिन्दी की वो हालत नहीं हो जाऐ जो फ़ेसबुक के आने से ऑरकुट की हुई है। अगर फ़ेसबुक जैसी रूचि अंग्रेजी के बजाय हिन्दी के लिऐ दिखाएं तो हिन्दी भी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बन सकती है। कुछ लोगों को यह काम गधे के सिर पर सींग उगाने जैसा लगता है लेकिन वो यह नही जानते कि जिन अंको का उपयोग पूरी दुनिया कर रही है, वो भी हमारी ही देवनागरी लिपि की देन है।

विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिन्दी अपना तीसरा स्थान रखती है। फिर भी साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में इसका ध्यान बहुत कम लोगों द्वारा बोली जाने वाल फ्रेंच, जर्मन और जापानी भाषाओं से भी नीचे है। हिन्दी नेपाल, भारत, इण्डोनेशिया, मलेशिया, सूरीनाम, फिजी, गुयाना, मॉरिशस, ट्रिनिडाड, टोबेगो एवं अरब अमीरात जैसे अनेक देशों में बोली जाती है। फिर भी आज तक इसे अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का दर्जा नहीं मिल पाया है। इसका प्रमुख कारण भारतीयों में संकल्प की कमी है। कुछ पढ़े-लिखे लोग इसे अपने ही घर में बोलने से झिझकते हैं।

विश्वस्तरीय भाषा का दर्जा दिलाने की बात तो कोसों दूर है। ऐसे लोग तर्क देते है कि अंग्रेजी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है। विकास के लिए अंग्रेजी जरूरी है। थोड़ी देर के लिऐ अगर उनकी बात को सही भी मान लिया जाऐ तो इसका मतलब यह नहीं कि अपनी भाषाओं को ताक में रख दिया जाये। और ऐसा भी नही है कि अंग्रेजी ने हमें विकसित देशों की श्रेणी में ला दिया हो और अंग्रेजी पढ़ाई भी जाती है तो ऐसे कि जैसे हम लंदन में पैदा हुऐ हों। नकल भी करते हैं पर अकल से नहीं।

क्रमशः ...

संकलन - लोकेन्द्र, शिव, पंचम वर्ष, वास्तुकला विभाग

एक सच्चे लोकतंत्र में जनता ही सर्वोच्च...

परंपरागत तरीकों को बदलें और भारत की उन्नति में सक्रिय योगदान दें। लोकतांत्रिक राजनीति का कोई विकल्प नहीं है। हमें इसी को हमारा भविष्य मानते हुए प्रगति के पथ पर अग्रसर होने के लिए तत्पर रहना होगा। इस समाज में राजनीतिज्ञों की अहम व महती भूमिका है।

राज्यव यवस्थाके स ंचालनके ल िलए में उनकी जरूरत तो है ही कई काम सिर्फ वे ही कर सकते हैं। अतः समाज में राजनेताओं के प्रति व्याप्त इस भावना को राजनीति को बेहतर बनाने में प्रयोग करना चाहिए, न कि उन पर दोषारोपण करने में। लोकसत्ता आंदोलन के राष्ट्रीय समन्वयक जयप्रकाश नारायण कहते हैं कि, ''राजनीतिज्ञों को समाज का कैंसर करार देने की उतावली एवं असंयमित आलोचना निरंकुशता को न्यौता देगी।''

सभी राजनीतिज्ञों को एक ही नजरिए से देखकर हम अच्छे लोगों के दृढ़निश्चय और संकल्प को कमजोर ही करेंगे जबकि जरूरत उन्हें मजबूत करने की है। मसला ये है कि राजनीति को बेहतर बनाने के लिए जो सुधार जरूरी हैं, उनहें भी राजनीतिज्ञों के माध्यम से ही अंजाम तक पहुँचाया जा सकता है। ऐसे में जब तक उनकी सत्ता पर आंच रहेगी उनसे एक उम्दा कानून की अपेक्षा नहीं की जा सकती । इस समस्या का पहला उपाय बातचीत का है और दूसरा संयमित जन-दबाव का। किसी भी कानून की आत्मा तय होती है संसद में बहस से। अगर वहां बैठे जन-प्रतिनिधियों को जब तक इस बात का डर रहेगा कि उनके घरों पर कोई पत्थर तो नहीं फेंक रहा है तब तक वे एक समृद्ध कानून के लिए जरूरी बहस में हिस्सा नहीं ले सकेंगे। तीसरा तरीका हो सकता है कि व्यापक जन-रणनीति के तहत चुनावों में वोट का जरिया अपनाकर विधायिका में सुधारों के समर्थक राजनीतिज्ञों की उपस्थिति बढ़ाई जाये।

- दिव्यांशु गोयल

तृतीय वर्ष, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग

फेस बुक

जुड़ रहें है आज रिश्ते कल्पना से,
संस्कृति फिर आज सिमटी जा रही है।
जिस गति में दोस्ती की श्रृंखला है,
वो गति संवेदना झुठला रही है।

अनगिनत जुड़ती है और फिर टूटती है,
कल्पना और भावना कुम्हला रही है।
यहाँ अचानक रोज मौसम हैं बदलते,
एक पीढ़ी गर्त में क्यों जा रही है।

सत्य की परछांई से होकर परे क्यों,
मानसिकता रोज धोखे खा रही है।
स्पप्न नगरी से निकलकर सत्य खोजो,
जिंन्दगी सबको यही समझा रही है।

अंशु सक्सेना

स्थापना शाखा, नियोजन एवं प्रशिक्षण विभाग

हालात

फिर अंधेरी रात में बिजली उड़ी है
फिर कहीं अपराध को ताकत मिली है
गूंज उठी है आज चीखें
कांप उठी अपनी धरा है
हर तरफ शोला ही शोला
पल में हर यौवन, ज़रा है।

है उखड़ती शासन व्यवस्था
धूल चाटते अधिकार हैं
हिंद हुआ है लाल देखो
हंस रहा आंतक है

बना बहरूपिया क्षण भर में जो
वो सफेद-चोगा बड़ा मक्कार है
रंग में इसके जो भी रंगा
तो सर्वस्व जीवन पर धिक्कार है

बच के रहना इस आंधी से
चली सुहानी मज़हबी हवा है
नज़रों में शक तैर गया क्यूं
जो नाम में बस इक 'ख़ान' जुड़ा है।

अब तो इसमें हाथ डालो
देखें, कौन किसके साथ है
देर की जो अब भी तुमने
आज ये भारत, कल विदेशी हाथ है।

- नीरत खण्डेलवाल

बी.टेक. द्वितीय वर्ष (विद्युत अभियांत्रिकी)

आत्म मथ न

आओ आज आत्म मन्थन करें,
अच्छे बुरे कर्मों का क्रन्दन करें।
कुछ दिल की सुने, कुछ दिमाग की माने,
सही गलत में अन्तर पहचाने।
जो छूट गया उसका मनन करें,
सुखी जीवन का अब सृजन करें।
बीता तो लौट न आये,
क्यों भविष्य में गलती दोहराये।
इक दूजे का हित देख के,
रोटी खाये, सेक-के।
आओ आज आत्म मन्थन करें,
अच्छे बुरे कर्मों का क्रन्दन करें।
रेत हाथ से फिसली नहीं है,
डोर श्वांस की टूटी नहीं है।
अपनो से रिश्ते तोड़ के,
क्यों जाये? अकाल दुनिया छोड़के।
आओ जीवन में मिठास घोले,
इक दुजे से प्यारे बोल-बोलें।
नश्वर संसार की नश्वरता देखें,
उतार घमंड को दूर फेकें।
आओ आज आत्म मन्थन करें,
अच्छे-बुरे कर्मों का क्रंदन करें।

राकेश कुमार वर्मा

बी-टेक चतुर्थ वर्ष (जनपद अभियांत्रिकी)

अपमान का असर तब तक होता है जब तक मान की भीख है

श्रीमद्भगवद्गीता

भगवद्गीता को गीतोपनिषद् भी कहा जाता है। यह वैदिक ज्ञान का सार है और वैदिक साहित्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपनिषद् है। भगवद्गीता विश्वभर में भारत के अध्यात्मिक ज्ञान के मणिरूप में विख्यात है। भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने घनिष्ठ मित्र अर्जुन को 700 श्लोकों के माध्यम से जीवन के वास्तविक लक्ष्य(आत्म-साक्षात्कार) का बोध कराया, जो भगवद्गीता के रूपमें विश्व-विख्यातहै। मनुष्यक भगवान् श्रीकृष्ण के साथ संबंध को अवगत कराने में इसकी तुलना में अन्य कोई ग्रन्थ नहीं है।

भगवद्गीता का ज्ञान किसी धर्म-विशेष अर्थात् मात्र हिन्दू-धर्म कि लिए नहीं है। उदाहरणार्थ गणित विषय के सूत्र (2+2=4)किसी जाति-विशेष अथवा धर्म-संप्रदाय के लिए ही लागू नहीं हैं अपितु इस संसार के प्रत्येक व्यक्ति के लिए लागू हैं। ठीक उसी प्रकार भगवद्गीता का ज्ञान इस सृष्टि के प्रत्येक मनुष्य (जीव) के लिए समान रूप से लागू होता है। जैसे कि भगवद्गीता (अध्याय 13 श्लोक संख्या 9) में भगवान् श्रीकृष्ण ने बताया है- ''जन्ममृत्युजराव्याधि दुःखदोषानुदर्शनम्।'' अर्थात इस सृष्टि में प्रत्येक जीव जन्म लेता है, वृद्ध होता है, रोगों से ग्रसित होता है और उसे अंत में अपना शरीर भी छोड़ना पड़ता है। यही प्रकृति का नियम है जो कि सृष्टि के प्रत्येक जीव पर लागू होता है।

भगवान् भगवद्गीता के दूसरे अध्याय में बताते हें कि प्रत्येक जीव एक आत्मा (सनातन-जिसका न जन्म होता है, न मृत्यु) है। शरीर एक आवरण मात्र है। जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर नए वस्त्रा धारण करता है, उसी प्रकार आत्मा पुराने तथा व्यर्थ शरीरों को त्याग कर नए भौतिक शरीर धारण करती है। हम एक आत्मा हैं और हमें हमारे पूर्व जन्मों के कर्मों के अनुसार एक निर्धारित शरीर प्राप्त होता है। शास्त्रों में बताया गया है कि कुल 84,00,000 योनियाँ होती हैं। ''दुर्लभं मानुषं जन्म- मनुष्य शरीर अत्यन्त दुर्लभता से प्राप्त होता है।''

भगवद्गीता का मर्म भगवद्गीता में व्यक्त है। जैसे कि यदि हमें किसी औषधि विशेष का सेवनक रनाह ोत ाे उस पर ल िलखेि निर्देशोंक ा पालन करना होता है। हम मनमाने ढ़ंग से औषधि नहीं ले सकते। इसका सेवन लिखे हुए निर्देशों के अनुसार या डॉक्टर के आदेशानुसार करना होता है। इसी प्रकार भगवद्गीता को इसके उपदेशक द्वारा दिये गए निर्देशानुसार ही ग्रहण या स्वीकार करना चाहिए। भगवद्गीता के उपदेशक भगवान् श्रीकृष्ण हैं। भगवद्गीता के प्रत्येक पृष्ठ पर उनका उल्लेख भगवान के रूप में हुआ है। हमें यह जानना होगा कि भगवान् श्रीकृष्ण पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं, जैसा कि भगवान् शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, निम्बार्क स्वामी, श्री चैतन्य महाप्रभु तथा भारत के वैदिक ज्ञान के अन्य विद्वान आचार्यों ने पुष्टि की है। भगवान् ने भी स्वयं भगवद्गीता में अपने को परम पुरुषोत्तम भगवान् कहा है और ब्रह्म संहिता तथा अन्य पुराणों में विशेषतया श्रीमद्भागवद् में (जो भागवतपुराण के नाम से विख्यात है)वे इसी रूप में स्वीकार किये गए हैं। (कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्)।

भगवद्गीता के चतुर्थ अध्याय(श्लोक संख्या 1 से 3) में भगवान् अर्जुन को बताते हैं कि भगवद्गीता का यह ज्ञान सर्वप्रथम सूर्यदेव को दिया गया, सुर्यदेव ने इसे मनु को बताया और मनु ने इसे इक्ष्वाकु को बताया। इस प्रकार गुरु-परंपरा द्वारा यह ज्ञान एक वक्ता तक पहुँचता रहा। लेकिन कालान्तर में यह छिन्न-भिन्न हो गया, जिसके फलस्वरूप भगवान् को इसे फिर से अर्जुन को कुरुक्षेत्र के युद्धस्थल में बताना पड़ा। वे अर्जुन से कहते हैं, ''मैं तुम्हें यह परम रहस्य इसलिए प्रदान कर रहा हूँ, क्योंकि तुम मेरे भक्त तथा मित्र हो।'' इसका तात्पर्य यह है कि भगवद्गीता ऐसा ग्रन्थ है जो विशेष रूप से भगवद्भक्त के लिए ही है।

हमें इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि अर्जुन ने भगवद्गीता को किस तरह ग्रहण किया। इसका वर्णन दसवें अध्याय में इस प्रकार हुआ है। अर्जुन ने कहा,''आप भगवान्, परम-धाम, पवित्रम्, परम सत्य हैं। आप शाश्वत्, दिव्य आदि पुरुष, अजन्मा तथा महानतम् हैं। नारद, असित, देवल तथा व्यास जैसे समस्त महामुनि आपके विषय में इस सत्य की पुष्टि करते हैं और अब आप स्वयं मुझसे इसी की घोषणा कर रहे हैं। हे कृष्ण! आपने जो कुछ कहा है मैं उसे पूर्णरूप से सत्य मानता हूँ। प्रभु! न तो देवता और न ही असुर आपके व्यक्तित्व को समझ सकते हैं।''

कोई यह सोच सकता है कि चूँकि कृष्ण अर्जुन के मित्र थे, अतः अर्जुन यह सब चापलूसी के रूप में की रहा था। लेकिन अर्जुन यह सब चापलूसी के रूप में कह रहा था। लेकिन अर्जुन भगवद्गीता के पाठकों के मन से इस प्रकार के संदेह को दूर करने के लिए अगले श्लोक में इस प्रशंसा की पुष्टि करता है, जब वह यह कहता है कि कृष्ण को केवल मैं ही भगवान् नहीं मानता, अपितु नारद, असित, देवल तथा व्यासदेव जैसे महापुरुष भी ये स्वीकार करते हैं। ये सब महापुरुष भी ये स्वीकार करते हैं। ये सब महापुरुष हैं जो समस्त आचार्यों द्वारा स्वीकृत वैदिक ज्ञान का प्रचार करते हैं। अतः अर्जुन कृष्ण से कहता है, सर्वमेतदृतं मन्ये-''आप जो कुछ कहते हैं, उसे मैं सत्य मानता हूँ।'' अर्जुन यह भी कहता है कि भगवान् के व्यक्तित्व को समझना बहुत कठिन है, यहाँ तक कि बड़े-बड़े देवता भी उन्हें नहीं समझ पाते। अतः मनुष्य बिनाभक्त बने भगवान् श्रीकृष्ण को कैसे समझ सकता है? भगवद्गीता का उद्देश्य मनुष्य को भौतिक संसार के अज्ञान से उबारना है। प्रत्येक व्यक्ति अनेक प्रकार की कठिनाईयों में फँसा रहता है, जिस प्रकार अर्जुन भी कुरुक्षेत्र में युद्ध करने के लिए कठिनाई में था। अर्जुन ने श्रीकृष्ण की शरण ग्रहण कर ली, फलस्वरूप इस भगवद्गीता का प्रवचन हुआ। न केवल अर्जुन वरन् हममे से प्रत्येक व्यक्ति इस भौतिक अस्तित्व के कारण चिंताओं से पूर्ण है। हमारा अस्तित्व ही अनस्तित्व के परिवेश में है। वस्तुतः हमें अनस्तित्व से भयभीत नहीं होना चाहिए। हमारा अस्तित्व सनातन् है। लेकिन हम किसी न किसी कारण से असत् में डाल दिये गये हैं। असत् का अर्थ है जिसका अस्तित्व नहीं है। कष्ट भोगने वाले अनेक मनुष्यों में केवल कुछ ही ऐसे हैं जो वास्तव में यह जानने के जिज्ञासु हैं कि वे क्या हैं और वे इस विषम स्थिति में क्यों डाल दिए गए हैं। जब तक उसे यह अनुभूति नहीं होती कि वह कष्ट भोगना नहीं, अपितु सारे कष्टों का हल ढूँढना चाहता है, तब तक उसे सिद्ध मानव नहीं समझना चाहिए। मानवता तभी शुरु होती है जब मन में इस प्रकार की जिज्ञासा उदित होती है।

जब मनुष्य जीवन के वास्तविक लक्ष्य को भूल जाता है जो भगवान कृष्ण विशेष रूप से उस लक्ष्य की पुनर्स्थापना के लिए अवतार लेते हैं। तब भी लाखों मनुष्यों में से कोई एक होता है जो अपनी वास्तविक स्थिति को जान पाता है और यह भगवद्गीता उसी के लिए कही गई है। वास्तव में, हम सभी इस भौतिक जगत् में माया के आकर्षण के वशीभूत हो चुके हैं जिसके फलस्वरूप हम आत्मा और परमात्मा के बीच के संबंध को भूल चुके हैं। लेकिन भगवान जीवों पर, विशेषतया मनुष्यों पर कृपालु हैं। इसी उद्देश्य से उन्होंने अपने मित्र अर्जुन को अपना शिष्य बना कर भगवद्गीता का प्रवचन किया।

भगवान कृष्ण का मित्र एवं प्रिय भक्त होने के कारण अर्जुन समस्त अज्ञान से मुक्त था, लेकिन कुरुक्षेत्र के युद्धस्थल में वह अज्ञानी बनकर भगवान कृष्ण से जीवन की समस्याओं के विषय में प्रश्न करने लगा जिससे भगवान उनकी व्याख्या भावी पीढ़ियों के मनुष्य के लाभ के लिए कर दें और जीवन की योजना का निर्धारण कर दें, ताकि मनुष्य उसी योजना की योजना का निर्धारण कर दें, ताकि मनुष्य उसी योजना से कार्य कर पाएगा और मानव जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सके।

अतः भगवद्गीता (8.6) में कहा गया है, ''अपने शरीर को त्यागते समय मनुष्य जिस-जिस भाव का स्मरण करता है वह अगले जन्म में उस-उस भाव को निश्चित रूप से प्राप्त होता है।'' जिस प्रकार भौतिकवादी लोग नाना प्रकार के समाचार पत्र, पत्रिकाएँ तथा अन्य संसारी साहित्य को पढ़ने में ध्यान लगाते हैं, उसी तरह हमें भी व्यासदेव द्वारा प्रदत्त साहित्य को पढ़ने में ध्यान लगाना चाहिए। इस प्रकार हम मृत्यु के समय परमेश्वरदका स्मरण कर सकेंगे। भगवान द्वारा सुझाया गया यही एकमात्र उपाय है और वे इसके फल का विश्वास दिलाते हैं, ''इसमें कोई संदेह नहीं है।''

तस्मात् सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च।
मरुयर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयः।।

''इसलिए, हे अर्जुन! तुम कृष्ण के रूप में मेरा चिंतन करो और साथ ही अपने युद्ध-कर्म करते रहो। अपने कर्मों को मुझे अर्पित करके तथा अपने मन एवं बुद्धि को मुझ पर स्थिति करके तुम मुझे निश्चित रूप से प्राप्त करोगे।'' (भगवद्गीता 8.7)। वे अर्जुन से उसके कर्म (वृत्ति) को त्याग कर केवल अपना स्मरण करने के लिए नहीं कहते। भगवान कभी भी कोई अव्यावहारिक बात का परामर्श नहीं देते। इस जगत में शरीर के पालन हेतु मनुष्य को कर्म करना होता है। यदि वह जीवन-संघर्ष करते हुए कृष्ण का स्मरण करने का अभ्यास नहीं करता तो वह मृत्यु के समय कृष्ण का स्मरण नहीं कर सकेगा। भगवान चैतन्य भी यही उपदेश देते हैं। उनका कथन है- कीर्तनीयः सदा हरिः- मनुष्य को चाहिए कि भगवान के नामों का सदैव उच्चारण करने का अभ्यास करें, भगवान का नाम तथा भगवान अभिन्न हैं। उसी प्रकार अर्जुन को भगवान ने शिक्षा दी ''मेरा स्मरण करो'' तथा चैतन्य महाप्रभु का यह भी आदेश है कि ''भगवान कृष्ण तथा कृष्ण के नामों का निरंतर कीर्तन करो'' दोनों एक ही है। शुद्ध सत्वमयी दशा में नाम तथा नामी में कोई अंतर नहीं होता। अतः हमें चौबीसों घंटे भगवान के नामों का कीर्तन करके उनके स्मरण का अभ्यास करना होता है और अपने जीवन को इस प्रकार ढ़ालना होता है कि हम भगवान कृष्ण को सदा स्मरण करते रहें।

अनन्त शेष दास
साभार (हरे कृष्णा टाइम्स)

''नमन्''

हे चमन के माली
हर फूल खुशी से
तुम्हें पुकार रहा है।
हे मालवीय जी
आज तुम्हारा चमन
तुम्हें पुकार रहा है।
घर सूना-सूना
आंगन खाली-खाली,
प्रतिमा तुम्हारी
कभी पूरा नहीं करती,
हाँ अवश्य यह,
प्रकाश पुंज यहीं से
विस्फुटित होता है।
इतिहास साक्षी है,
एकलव्य ने शिक्षा
गुरु प्रतिमा से पाई थी।
सब कहते है
तुम शिक्षक प्रेरक हो
मैं कहता हूँ प्राणी पेरक हो।
तुम्हारे आदर्शों से प्रेरित हो,
हमने जो पाठ पढ़ा

आज उसी का फल
जो तुम्हें याद किया।
तिमिर में संदेश भर
अंधकार में प्रकाश के प्रतीक,
बहु आयामी व्यक्तित्व
निर्माण के आधार
स्वर्ग में बैठे हो।
हे मालवीय जी
क्षमा प्रार्थी हैं हम
न जन्म, न निर्वाण
हमें नहीं याद।
फिर भी विश्वास दिलाते हैं,
हर रोज नये फूल खिलायेंगें।
एक न एक दिन
इसकी महक तुम्हारे स्वर्ग में पहुँचायेंगें।
दायित्व हमें सौंपा है
हम निभायेंगें।
एक न एक दिन इन छात्रों में
तुमको फिर पायेंगें।।

राजकुमार दुबे
स. लेखा अधिकारी

जी चाहता है!!!

ऊपर बहुत ऊपर,
है एक अनन्त आकाश,
निश्चल, मोहक और शांत।
देखता हूँ जब मैं इसे,
उड़कर छूने को जी चाहता है।
हाँ, धरा से पाँव उठाकर,
काल्पनिक पंखों के सहारे,
उड़ा नहीं आज तक।
चलते हुए इस लम्बे पथ पर,
यह धिर नीलाम्बर,
एकटक, अपलक देखने को जी चाहता है।।
असंख्य उड़गन, शीतल चन्द्रमा और
उन्मुक्त सूरज,
हैं जिसके विशाल आँचल में,
अपनी विशाल सम्पदा से
सम्भवतः मुझे चिढ़ाने का
कर रहा है प्रयास,
फिर भी अपने अन्दर के आकाश को,
घहराते, उमड़ते बादलों से-
देखकर ढंका हुआ,
विस्तृत ऊपर के आकाश में,
बस, विलीन करने को जी चाहता है।।

लेकिन, पैरों से बँधे अतुलित भार को,
भूल जाता हूँ मैं।
याद करते ही स्थिति अपनी-
टिकी हुई, इस धरती पर।
दृष्टि स्वतः ही हट जाती है,
खिसियाकर आकाश से-
और तब?
देखकर अपने कदमों की ओर-
सपने... इरादे...
और नवीन उमड़ते विचार,
सब, हाँ सब कुछ,
भूला देने को जी चाहता है।।
और अपने अन्तर के आकाश को,
समेटे अपने में ही,
हाँ सच में इस धरा पर पूर्ववत्
चलने को, चलते रहने को,
जी चाहता है, जी चाहता है।।

दीप सिंह
पुस्तकालयाध्यक्ष
मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर

प्रकाशक एवं सम्पादक डॉ. ज्योति जोशी, मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर, मालवीय नगर, जयपुर-302 017 • फोन : 9413971604, 0141-2713550
ई-मेल : malaviyaprakash.lokmat@gmail.com • सदस्य, सम्पादक मंडल : डॉ. अशोक शर्मा, डॉ. राजकुमार व्यास, डॉ. कैलाश सिंह, श्री सुशान्त उपाध्याय।
छात्र सदस्य : अंशुल शर्मा (यांत्रिकी अभियांत्रिकी), शुभम चौधरी (वाणिकी अभियांत्रिकी), मुकेश धीमानी (रसायन अभियांत्रिकी), दिव्यांशु गोयल (वैद्युत अभियांत्रिकी)
लेजर टाईप सैटिंग एवं मुद्रण स्थल : द् प्रिण्ट पैलेस, कैलगिरी रोड, मालवीय नगर, जयपुर-302 017 • फोन : 0141-4002016